कलम की सुगंध
अर्पण कलश एसोसिएशन

मन की वीणा

कुण्डलियाँ

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'

मन की वीणा

(कलम की सुगंध छंदशाला)

कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-229-6
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY KUSUM KOTHAREE PRAGYA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

फूल कुसुम ज्यों खिले, फैली धरा सुगंध।
आपको सब खुशी मिले, जीवन का आबंध।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया कुसुम कोठारी जी का एकल संग्रह **"मन की वीणा"** प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया कुसुम जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया कोठारी जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मक ता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

अ मंदिलवार

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

आदरणीया कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा' जी आपने कुण्डलियाँ सृजन में शतक बना लिया है। निःसंदेह आप की सशक्त कलम से जो कुण्डलियाँ अंकुरित प्रस्फुटित हुई है, वे सराहनीय हैं प्रशंसनीय हैं। कुण्डलियाँ जैसी कठिन विधा पर इतनी सरलता से आप ने सृजन किया है। यह सफल कृत्य साहित्यिक मन के साहित्यिक प्रेम को उजागर करता है। निश्चित ही आप एक बड़ी साहित्यकारा हैं, इस बात से हम पहले से भी भली भांति परिचित हैं। 'कलम की सुगंध परिवार' की तरफ से मुझे आपकी कुण्डलियाँ संग्रह की समीक्षा लेखन प्रभार देते हुए आमंत्रित किया है। आदरणीय संजय कौशिक 'विज्ञात' जी के आदेशानुसार मुझे ये सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके लिए मैं आपका और आ. विज्ञात जी और आ. सपना दीदी का हृदय तल से आभार प्रकट करती हूँ।

दिखती है उत्तम कलम, कवयित्री हो श्रेष्ठ।
शतक वीर संकल्प में, सृजनकार हो जेष्ठ॥
सृजनकार हो जेष्ठ, मार्ग भटको को देती।
ज्ञान पुन्ज भण्डार, भाव अच्छे लिख लेती॥
सुवासिता के पास, समीक्षा आई लिखती।
न्यारी छविमय चित्र, कुसुम कोठारी दिखती॥

प्रदत्त शब्द विषय पर आपकी कलम एक बार नहीं पूरे सौ बार गरजी और बरसी है सुंदर शब्द चयन, श्रेष्ठ लय उत्तम भाव के साथ आपका कुण्डलियाँ संग्रह पाठक वर्ग को निश्चित ही आकर्षित करेगा। यदा-कदा जब भी पढ़ेगा तो पढ़कर कुण्डलियाँ पूर्ण आनंद प्राप्त करेगा। आपने इतनी सरलता से लिखा है शिल्प और भाव की कसौटी पर पूर्णतया खरी उतरती हैं आपकी कुण्डलियाँ जो आपके आत्मविश्वास का परिचायक हैं।गागर में सागर कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आपको **'मन की वीणा'** की सफलता के लिए हृदय तल से बहुत बहुत बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।

चमेली कुर्रे 'सुवासिता'
चिकित्सा प्रयोगशाला तकनीशियन
जगदलपुर (बस्तर) छत्तीसगढ़

शुभकामना संदेश

प्रिय कुसुम कोठारी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह **'मन की वीणा-कुण्डलियाँ'** विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'

संस्थापक

कलम की सुगंध

कवियत्री की कलम से

मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि "अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन" मेरा प्रथम एकल संग्रह प्रकाशित कर रहा है। ये संग्रह छंद की कुण्डलियाँ विधा में लिखा गया है।

"मन की वीणा-कुण्ड़लियाँ" नाम से यह पुस्तक प्रकाशन में आ रही है। इस से पहले मैं अतुकान्त कविता लेखन करती रही थी। कलम की सुगंध मंच से जुड़ कर मुझे छंद लेखन की नई दिशा मिली। कलम की सुगंध एक ऐसा उत्कृष्ट मंच है जहां नवांकुर रचनाकारों को सदा साहित्य की नयी विधाओं में लिखने की प्रेरणा मिलती है।

आदरणीय नीतू ठाकुर विदूषी जी ने मुझे छंद लिखने की प्रेरणा दी। आदरणीय संजय कौशिक "विज्ञात" जी के समय-समय पर दिए दिशा निर्देश और प्रोत्साहन से ये संकलन पूर्ण हुआ। आदरणीय अनिता मंदरिवाल जी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए सादर आभार।

छंद लेखन की मेरी ये यात्रा बड़ी रोचक और रोमांचक रही। अनिता श्रीवास्तव जी का विशेष आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने मुझे शुरुआत में इस विधा लेखन में सहृदय सहयोग दिया। इस संग्रह के लिए मेरे परिवारजनों ने मुझे हर दिन प्रोत्साहन दिया, उनके सहयोग के बिना यह लेखन मेरे लिए असंभव होता। आज जब ये संग्रह प्रकाशित हो रहा है। आशा करती हूं मेरा प्रयास आप सब को पसंद आयेगा।

कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'

१.

नागर

नागर नटखट निर्गुणी, गोविंदा गोपेश।
अजया अचला अक्षरा, दामोदर देवेश।।
दामोदर देवेश, दानवेन्द्रो दुखभंजन।
जगन्नाथ जगदीश, सर्वपालक सुखरंजन।।
योगिश्वर यदुराज, अनादिह अच्युत आगर।
सत्यवचन सद्रूप, निरंजन नटवर नागर।।

२.

कुमकुम

चंदन कुमकुम थाल में, गणपति पूजूं आज।
मंगल कर विपदा हरे, पूर्ण सकल ही काज।।
पूर्ण सकल ही काज, कि शुभ्र भाव हो दाता।
रखें शीश पर हस्त, साथ हो लक्ष्मी माता।।
कहे कुसुम कर जोड़, सदा मैं करती वंदन।
तुझ को अर्पण नाथ, खीर शहद और चंदन।।

३.

काजल

नयना काजल रेख है, बिंदी सजती भाल।
बनठन के गोरी चली, ओढ़ चुनरिया लाल।।
ओढ़ चुनरिया लाल, नाक में नथनी डोली।
छनकी पायल आज, हिया की खिड़की खोली।।
कैसी सुंदर नार, आँख लज्जा का गहना।
तिरछी चितवन डाल, बाण कंटीले नयना।।

४.

गजरा

छम छम नखराली चली, आज पिया के द्वार।
बालों में गजरा सजे, नख शिख है शृंगार।।
नख शिख है शृंगार, आँख में अंजन ड़ाला।
झुमके सजते कान, कंठ शोभित है माला।।
पिया मिलन की आस, बरसते बादल झम झम।
सुंदर मुख चितचोर, चली मृगनयनी छम छम।।

५.

पायल

पायल तो नीरव हुई, पाखी हुए उदास।
कैसे में कविता लिखूँ, शब्द नहीं है पास।।
शब्द नही है पास, हृदय कोरा है सारा।
सूना अब आकाश, बुझा है मन का तारा।।
लेखन रस से हीन, करे है मन को घायल।
मुक्ता चाहे हार, घुंघरू चाहे पायल।।

६.

कंगन

कंगन खनका जोर से, गोरी नाचे आज।
पायल औ बिछिया बजे, घर में मंगल काज।।
घर में मंगल काज, उठा ली जिम्मेदारी।
चूनर सुंदर लाल, हरा लँहगा अति भारी।।
गले नौलखा हार, उसी से सजता अंगन।
सारे घर की आन, हाथ में दो दो कंगन।।

७.

बिंदी

मेरे भारत देश का, हिन्दी है शृंगार।
भाषा के सर पर मुकुट, देवनागरी सार।।
देवनागरी सार, बनी है मोहक भाषा।
बढ़े सदा यश कीर्ति, यही मन की अभिलाषा।।
अलंकार का वास, शब्द के अभिनव डेरे।
गहना हिन्दी डाल, सजा तू भारत मेरे।।

८.

डोली

डोली चढ़ दुल्हन चली, आज छोड़ घर द्वार।
धुनक रही है ढोलकें, साथ मंगलाचार।
साथ मंगलाचार, सखी साथी सब छूटे।
मुंह न निकले बोल, दृगों से मोती टूटे।
सबका आशीर्वाद, रचे है कुमकुम रोली।
धीरे धीरे साथ, चले पिया संग डोली।।

९.

आँचल

फहराता आँचल उड़े, मधु रस खेलो फाग।
होली आई साजना, आज सजाओ राग।।
आज सजाओ राग, कि नाचें सांझ सवेरा।
बाजे चंग मृदंग, खुशी मन झूमे मेरा।।
रास रचाए श्याम, गली घूमे लहराता।
झुकी लाज से आँख, पवन आँचल फहराता।।

१०.

कजरा

काला कजरा डाल के, बिंदी लगी ललाट।
रक्तिम कुमकुम से सजे, बालों के दो पाट।।
बालों के दो पाट, लगा होठों पर लाली।
बेणी गजरे डाल, चली नारी मतवाली।।
लाल लाल है गाल, नैन सुख देने वाला।
आँजती सुबह शाम, आँख में अंजन काला।।

११.

चूड़ी

चूड़ी पहनू काँच की, हरी लाल सतरंग।
फागुन आया ओ सखी, ढ़ेर बजे है चंग।।
ढ़ेर बजे है चंग, नशा सा देखो छाया।
फाल्गुन का ये मास, नया पराग ले आया।।
साजन आना आज, खिलाउं हलवा पूड़ी।
छनकी पायल पैर, हाथ में छनके चूड़ी।।

१२.

झुमका

डाली पत्र विहीन है, पलास शोभा रुक्ष।
सोने का झुमका लगे, विपिन सजा ये वृक्ष।।
विपिन सजे ये वृक्ष, बिछे धरणी पर ऐसे।
गूँथें तारे चाँद, परी के आँचल जैसे।।
मोहक सुंदर रूप, सजी बगिया बिन माली।
बिछे धरा पर पूंज, सुनहरी चादर डाली।।

१३.

जीवन

जीवन जल की बूंद है, क्षण में जाए छूट।
यहां सिर्फ काया रहे, प्राण तार की टूट।।
प्राण तार की टूट, धरा सब कुछ रह जाता।
जाए खाली हाथ, बँधी मुठ्ठी तू आता।।
कहे कुसुम ये बात, सदा कब रहता सावन।
सफल बने हर काल, बने उत्साही जीवन।।

१४.

उपवन

महका उपवन आज है, निर्मेघ गगन अतुल्य।
द्रुम पर पसरी चाँदनी, दिखती चाँदी तुल्य।।
दिखती चाँदी तुल्य, हिया में प्रीत जगाती।
भूली बिसरी याद, चाह के दीप जलाती।।
पहने तारक वस्त्र, निशा का आँगन चहका।
आये साजन द्वार, आज सुरभित मन महका।।

१५.

कविता

रूठी रूठी शल्य की, गीत लिखे अब कौन।
कैसे मैं कविता रचूं, भाव हुए हैं मौन।।
भाव हुए हैं मौन, नही अवली में मोती।
नंदन वन की गंध, उड़ी उजड़ी सी रोती।।
कहे कुसुम ये बात, बिना रस लगती झूठी।
सुनो सहचरी मूक, नहीं रहना तुम रूठी।।

१६.

ममता

ममता माया छोड़ दी, छोड़ दिया संसार।
राग अक्ष से बँध गया, नहीं मोक्ष आसार।।
नही मोक्ष आसार, रही अन्तर बस आशा।
अपना आगत भूल, फिरे शफरी सा प्यासा।।
कहे कुसुम ये बात, हृदय में पालो समता।
रहो सदा निर्लिप्त, रखो निर्धन से ममता।।

१७.

बाबुल

बाबुल तेरा अंगना, छोड़ चली हूं आज।
हाथ रचा कर मेंहदी, आँखों में है लाज।।
आँखों में है लाज, सजा सपने मतवाली।
आज चली परदेश, लाड़ से पलने वाली।।
कहे कुसुम ये बात, ब्याह कर भेजा काबुल।
पूछे बेटी आज, दूर क्यों भेजा बाबुल।।

१८.

भैया

राखी भेजी प्रेम से, प्रेम भरा उपहार।
भैया यादों में रखो, गूँथ पुष्प ज्यों हार।।
गूँथ पुष्प ज्यों हार, सहेजे बहना तेरी।
रखना मन में प्यार, यही विनती है मेरी।।
कहे कुसुम ये बात, एक उपवन के पाखी।
बहता है अनुराग, भाव है सुंदर राखी।।

१९.

बहना

बहना कहे उदास हो, छूटा अब परिवार।
माँ बाबा की लाडली, चली दूसरे द्वार।।
चली दूसरे द्वार, भरा नयनों में पानी।
भ्राता कहे भर अंक, रहे तू बनके रानी।।
मैं तो तेरे साथ, मान तू मेरा कहना।
यही जगत की रीत, खुशी से रह तू बहना।।

२०.

सखियाँ

सखियाँ सुख की खान है, मीठा मधु रस पान।
हिलमिल हँसती खेलती, एक एक की जान।।
एक एक की जान, खुशी में झूमे नाचे।
करे कुंज में केलि, हाथ सुगंध रँग राचे।।
कहे कुसुम ये बात, रखो पुतली भर अखियाँ।
ये जीवन का सार, जगत में प्यारी सखियाँ।।

२१.

कुनबा

छोटा कुनबा हो चले, रहे प्रेम व्यवहार।
एक दूसरे के लिए, हो मन में बस प्यार।।
हो मन में बस प्यार, करें बातें हितकारी।
सजता इससे धाम, सदा हो मंगलकारी।।
सुनो कुसुम की बात, भाव न हो कभी खोटा।
अन्तर तक हो प्रेम, सदन हो चाहे छोटा।।

२२.

पीहर

पारस पीपल पुष्प से, पीहर बसते प्राण।
पिता पितामह पूज्य है, पंथ पथिक के त्राण।।
पंथ पथिक के त्राण, पालते पालक पीड़ा।
पलक पसारे प्राण, प्रथम प्रधान का बीड़ा।।
पले कुसुम परिवार, प्रीत पायें ज्यों पावस।
परस प्रेम परिणाम, प्रथम प्रतिपादित पारस।।

२३.

पनघट

पनघट आई गूजरी, चंदन महका आज।
बहकी बहकी चाल है, आँखों में है लाज।।
आँखों में है लाज, झूम मन नाचे गाए।
द्रुम छेड़े नव राग, श्याम ज्यों बँसी बजाए।।
कहे कुसुम ये राज, हवा से उड़ती घटलट।
निज उलझा है जाल, देख ललिता को पनघट।।

२४.

सैनिक

सैनिक मेरे देश का, सदा हमारी आन।
देश सुरक्षा वारता, अपनी तन मन जान।।
अपनी तन मन जान, पहनकर रखता वर्दी।
करता है कर्तव्य, कड़क हो चाहे सर्दी।।
कहे कुसुम हो धन्य, कार्य उनका ये दैनिक।
बनता पहरेदार, देश का रक्षक सैनिक।।

२५.

कोयल

छाया अब मधुमास है, गाये कोयल गीत।
कितनी मीठी रागिनी, घर आए मनमीत।।
घर आए मनमीत, सपन मधु भरके लाता।
पुष्पित है हर डाल, भ्रमित भौंरा भरमाता।।
कहे कुसुम ये बात, आज बसंत मुस्काया।
तरुण हुवा हर पात, बाग पर यौवन छाया।।

२६.

अम्बर

बरसे है शशि से विभा, वल्लरियों के पात।
अम्बर निर्मल कौमुदी, सजा हुआ है गात।।
सजा हुआ है गात, विटप मुख चूम रही है।
सरित सलिल रस घोल, मधुर स्वर झूम रही है।।
विधु का वैभव दूर, निरख के चातक तरसे।
जलते तारक दीप, धरा पे ज्योत्स्ना बरसे।।

२७.

अविरल

अविरल घन काले घिरे, छाये छोर दिगंत।
भ्रम है या जंजाल है, दिखे न कोई अंत।।
दिखे न कोई अंत, गूढ़ गहराती छाया।
बची न कोई आस, घिरी संकट में काया।।
कहे कुसुम ये बात, राह कब होगी अविचल।
सुनें आम की कौन, हुआ जग जीवन अविरल।।

२८.

सागर

सागर में उद्वेग है, सूर्य मिलन की चाह।
उड़ता बन कर वाष्प वो, चले धूप की राह।।
चले धूप की राह, उड़े जब मारा मारा।
मृदु होता फिर शांत, झेल प्रहार बेचारा।।
कहे कसुम ये बात, सिंधु है जल का आगर।
कुछ पल गर्वित मेघ, मिले वो जा फिर सागर।।

२९.

अनुपम

महकी मँजरी बाग में, छाया सरस स्वरूप।
करे सूर्य किल्लोल है, बिखरा मोहक रूप।।
बिखरा मोहक रूप, डाल बूंटो से निखरी।
डोली नाची साथ, पवन सुरभित हो बिखरी।।
कहे कुसुम ये बात, गूँज मधुकर की चहकी।
मँजरी हुई निहाल, रीझ सौरभ से महकी।।

३०.

धड़कन

पावन ये शृंगार है, धड़कन का संगीत।
बूझे कोई प्यार से, माँ ही ऐसा गीत।।
माँ ही ऐसा गीत, कंठ में मधुर समाई।
जीवन का आधार, पूर्व भव पुण्य कमाई।।
कहे कुसुम सँग प्रीत, झूम कर नाचे सावन।
धात्री सम है कौन, पूर्ण पवित्र औ पावन।।

३१.

वीणा

वीणा तू तो नाम की, सब तारों का काम।
काया ज्यों बिन प्राण के, धरी रहे निष्काम।।
धरी रहे निष्काम, नही कुछ सुर है तुझ में।
नाम मधुरिमा झूठ, सत्व साधन है मुझ में।।
सुनो कुसुम की बात, बात सन्मति से गुनणा।
पड़े तार को चोट, कहें मृदु माया वीणा।।

३२.

नैतिक

गहरे इसके भाव हैं, अर्थ समेटे गूढ़।
नैतिक गहरा शब्द है, समझ न पाए मूढ़।।
समझ न पाए मूढ़, हँसी में ठोकर मारी।
करता भ्रष्टाचार, छोड़ नैतिकता सारी।।
कहे कुसुम ये बात, रहे प्रज्ञा के पहरे।
सन्मति सद्व्यवहार, रखो अंतस में गहरे।।

३३.

विजयी

दानव विजयी मात हे, विजया तुझे प्रणाम।
भीति भगवती भंजना, सुखद सकल परिणाम।।
सुखद सकल परिणाम, क्लेश काया के हरती।
जग में शुचि विस्तार, हर्ष के वर्तुल भरती।।
कहे कुसुम कर जोड़, कठिन भव पाया मानव।
तू कर परोपकार, भगा दे मन का दानव।।

३४.

भारत

भारत देश महान है, हम सब का सम्मान।
सब राष्ट्रों में श्रेष्ठ ये, हिन्द मान बहुमान।।
हिन्द मान बहुमान, शीश पर ताज हिमाला।
सागर पाँव पखार, बाँह नदियों की माला।।
कहे कुसुम ये बात, ऋचाएं और सगारत।
कर्म करें सब शुद्ध, सदा शुचिता मम भारत।।

३५.

छाया

छाया गहरी शांत है, सूरज जैसा रंग।
प्यारे लगते ये पथिक, उष्ण राह में संग।।
उष्ण राह में संग, खिले रहते मन भावन।
कृष्ण चूड़ तुम नाम, तुम्ही साथी औ सावन।।
कहे कुसुम ये बात, रूप है अनुपम पाया।
आ राही तू बैठ, सरस गुलमोहर छाया।।

३६.

निर्मल

बिखरे नभ सारंग है, निर्मल श्वेत वलक्ष।
नीलांबर से झांकते, भागे भोर अलक्ष।।
भागे भोर अलक्ष, व्योम आँगन में खेले।
मेघों के ये माल, थाप समीर की झेले।।
कहे कुसुम ये बात, विभा में आभा निखरे।
हय शुक्ल के सवार, पवन प्रहार से बिखरे।।

३७.

विनती

विनती है माँ पाद में, झाँकी देख निहाल।
तेरी छवि को देख के, झुकता है मुझ भाल।।
झुकता है मुझ भाल, बुद्धि से भर दे झोली।
गाऊं मैं गुणगान, बोल के मीठी बोली।।
कहे कुसुम कर जोड़, बैन अंतर से सुनती।
वीणा शोभित हाथ, शुभ्र वसना सुन विनती।।

३८.

भावुक

कैसी बेड़ी में फँसा, भावुक मन अनजान।
अविनाशी ये जीव है, मानो अरे सुजान।।
मानो अरे सुजान, परख लो करनी अपनी।
छोड़ सकल ही राग, ब्रह्म की माला जपनी।।
सदा भावना शुद्ध, रहे पावन बस ऐसी।
मुक्त रहें हर प्राण, पाँव में बेड़ी कैसी।।

३९.

धरती

धरणी धरती क्षिति धरा, तेरे कितने नाम।
वसुन्धरा हे मेदिनी, सब मानव के धाम।।
सब मानव के धाम, मही तू कितनी प्यारी।
वसुधा, अचला, मान, कामिनी सी तू न्यारी।।
कहे कुसुम ये बात, जले दोनों ज्यों अरणी।
नारी तू भी भूमि, क्षमा में जैसे धरणी।।

४०.

मानव

मानव सुन तन दीप में, डाल सुमति का तेल।
ज्ञान रूप बाती जला, जग में फैले मेल।।
जग में फैले मेल, करो बस सुंदर करनी।
सत्य एक बस जान, कर्म जैसी ही भरनी।।
कहे कुसुम सुन बात, हृदय से मारो दानव।
रखो प्रेम सद्भाव, बनो सज्जन तुम मानव।।

४१.

गागर

गागर फोड़ी श्याम ने, भीगे सुंदर चीर।
आँख तरेरी गोपियां, आई यमुना तीर।।
आई यमुना तीर, कृष्ण की बंसी छीनी।
छुपी वृक्ष की आड़, ओट चूनर की झीनी।।
कुसुम कहे सुन बात, वेणु ढूढ़े अब नागर।
नटखट नटवर लाल, भाव से भर दे गागर।।

४२.

सरिता

सरिता तन्वंगी हुई, बीता वर्षा मास।
सुषमा मोहक सी भरे, फूल रहें हैं कास।।
फूल रहें हैं कास, शरद लगता सुखदाई।
बहुत पड़े जो ठंड, चले कंबल ठकुराई।।
सुनो कुसुम की बात, प्रिये सुखांत है सविता।
लगे किनारे धूम, मंद बहती जब सरिता।।

४३.

गहरा

गहरा तम छाई निशा, श्याम घटा घनघोर।
गरज-गरज हुंकारते, हवा मचाए शोर।।
हवा मचाए शोर, तड़ित कड़के अति चमके।
सांय-सांय बह वायु, गगन घन बरसे जमके।।
कहे कुसुम ये अगम, समय विनाश का ठहरा।
प्रकृति करे प्रतिकार, सदा होता है गहरा।।

४४.

आँगन

आँगन खेले लाडला, हँसे देख कर नंद।
बाहर मालिन बैठ कर, बेच रही है कंद।
बेच रही है कंद, श्याम को निरखन आई।
भर-भर देती हाथ, साथ वो मेवे लाई।
कहे कुसुम ये बात, लाल से महका प्राँगण।
फूल खिले चँहु ओर, यशोदा माँ के आँगन।।

४५.

आधा

आधा चाँद छुपा रहा, कर बादल की ओट।
आज चकोरी के हृदय, लगी जोर से चोट।।
लगी जोर से चोट, हुई घायल बेचारी।
शशि के मुख पर हास, देख उसकी लाचारी।।
कहे कुसुम ये राज, चकोरी है ज्यों राधा।
धुंधला है मुख चंद्र, चाँद ज्यों नभ में आधा।।

४६.

यात्रा

तोड़ो बंधन सांकले, मोक्ष मुक्ति का साक्ष्य।
यात्रा हो उस धाम की, सद्गति हो बस लक्ष्य।।
सद्गति हो बस लक्ष्य, विमल निश्छल ही रहना।
जीवन में जो दर्द, सभी धीरज से सहना।।
कुसुम ज्ञान की बात, कमाई भव की जोड़ो।
सद्भावों के वृक्ष, लदे फल मीठे तोड़ो।।

४७.

कोना

उपवन का कोना खिला, खिले बंसती फूल।
बागों में झूले पड़े, सजे सरोवर कूल।।
सजे सरोवर कूल, भ्रमित हो भँवरे डोले।
निखरा-निखरा रूप, धरा ने नव पट खोले।।
"कुसुम" मधुर संयोग, मधुप मौसम औ मधुबन।
फलती है सब आस, सरसता रहता उपवन।।

४८.

मेला

नीरव, निखरी है निशा, नभ के भाल मयंक।
मेला चन्द्रमरीचिका, कौमुदी निष्कलंक।।
कौमुदी निष्कलंक, छटा मंजुल मनभावन।
नवल नयनाभिराम, रूप नैसर्गिक पावन।।
कहे कुसुम इस रात, करे झिंगुर भी आरव।
जुगनू चम-चम चाँद, चाँदनी सोई नीरव।।

४९.

धागा

मोती गूंथा प्रेम से, बांधा भाई हाथ।
धागा है ये रेशमी, बहन भ्रात का साथ।।
बहन भ्रात का साथ, सदा होता है पावन।
चाँद किरण सा स्नेह, मेल इनका मनभावन।।
कहे कुसुम सुन बात, बंधु संकट पर रोती।
एक उदर के फूल, एक धागे के मोती।।

५०.

बिखरी

बिखरी-बिखरी धूप हैं, कुछ ठंड़ी सी नर्म।
जाड़े में प्यारी लगे, गर्मी में ये गर्म।।
गर्मी में ये गर्म, देह को नही सुहाती।
कभी चढ़े मुंडेर, कभी वृक्षों पर गाती।।
कहे कुसुम सुन बात, भोर में निखरी-निखरी।
होती है जब सांझ, दुखी औ बिखरी बिखरी।।

५१.

गलती

मानव करता भूल है, जान और अन्जान।
गलती कर जो सीखता, वो ही गुण की खान।
वो ही है गुण खान, करे जो उत्तम करनी।
माने निज की भूल, विज्ञ की सुनता कथनी।
सुनो कुसुम मधु बात, हठी क्यों होवे आनव।
मंथन करे विवेक, सजग हो प्रतिपल मानव।।

५२.

बदला

बदला-बदला रूप है, बदली सी है चाल।
अभिमानी सम्मान पा, होता है खुशहाल।
होता है खुशहाल, घड़ा ज्यों छलका जाता।
निज को समझें विज्ञ, ज्ञान की थाह न पाता।
कुसुम कहे ये बात, हृदय इनका है गँदला।
साम दाम की धार, भाव में रहता बदला।।

५३.

दुनिया

सारी दुनिया देखती, आँखो का ये हास।
अँदर डाला नही दिखे, काजल कितना पास।।
काजल कितना पास, कोर के भीतर रहता।
मुझ से सुंदर नैन, सदा गर्वित हो कहता।
कहे कुसुम ये भेद, बात है कितनी न्यारी।।
घट में रहते ईश, ढूंढ़ती दुनिया सारी।।

५४.

तपती

हरता तपती ताप को, माँ पर श्रृद्धा भाव।
सुमिरन हो आठों पहर, मानस रख तू चाव।।
मानस रख तू चाव, आस पूरित हो तेरी।
कहती माँ सब छोड़, शरण में आजा मेरी।।
कहे कुसुम जो ध्यान, विनय से उसको करता।
उनको माँ की छाँव, मात ही संकट हरता।।

५५.

मेरा

मेरा तेरा छोड़ दें, भजले प्रभु का नाम।
धरा रहेगा सब यहीं, करले पावन काम।।
करले पावन काम, काम की तज दे भाषा।
गति को करले शुद्ध,उच्च गति की अभिलाषा।।
कहे कुसुम सुन बात, मिटे भव-भव का फेरा।
अमर रहे बस नाम, मोल ये तेरा मेरा।।

५६.

सबका

सबका साथ रहे सदा, हो जीवन में प्यार।
हार विजय का हो गले, कभी न आए हार।।
कभी न आए हार, निराशा दूर भगाना।
मन में दृढ़ विश्वास, ज्ञान की अलख जगाना।।
कहे कुसुम रख भाल, भाल उन्नत ज्यों नभ का।
कर जग हित में काम, दुलारा हो तू सबका।।

५७.

आगे

कविता क्या है जान लो, है भावों का गीत।
पढ़ो और आगे बढ़ो, मत कर ऐसी प्रीत।।
मत कर ऐसी प्रीत, भोर की लाली इसमें।
सागर की है थाह, मग्न डूबे जो उसमें।।
कहे कुसुम ये ओस, शीत में जैसे सविता।
शीतल जैसे चाँद, राग है मन की कविता।।

५८.

मौसम

सूरज का मृदु हास है, उठी सुरंगी भोर।
मौसम है पथ पर खड़ा, नाच रहे मन मोर।।
नाच रहे मन मोर, हवा में सौरभ भीनी।
विटप खड़े हैं शांत, ओढ के चूनर झीनी।।
खुशी कुसुम मन झूम, ताल में सुंदर नीरज।
अति मोहक ये काल, लाल प्राची में सूरज।।

५९.

जाना

पाना है बस लक्ष्य को, अलग-अलग है चाह।
जाना होगा एक दिन, पकड़ एक ही राह।।
पकड़ एक ही राह, जगत है रैन बसेरा।
छोड़ यहां सब काम, कहां होगा अब डेरा।।
कहे कुसुम सुन बात, सदा शाश्वत है जाना।
कर लो उत्तम कार्य, वहां सद्गति हो पाना।।

६०.

करना

दानव वध कर भैरवी, उग्र दिखाया रूप।
दुष्ट दंश करना सदा, है तू शक्ति स्वरूप।।
है तू शक्ति स्वरूप, भवानी तू ही सत्या।
तू माता का रूप, बुद्धिदा, ब्राह्मी नित्या।।
कहे कुसुम कर जोड़, शरण में आजा मानव।
शूलधारिणी शूल, हनन करता हर दानव।।

६१.

दीपक

जलता दीपक देखकर, बोला दीपक एक।
जलना औरों के लिए, राय तुझे है नेक।।
राय तुझे है नेक, तमस अपना भी हर ले।
तम से बाहर झांक, आत्म दर्शन तो कर ले।।
कुसुम ज्ञान की बात, गंध अंतर को छलता।
भटके रे सारंग, झूठ ज्वाला में जलता।।

६२.

पूजा

ज्ञानी बन पूजा करें, समझ सार ये तथ्य।
सद्ज्ञानी बूझे सदा, झूठ नहीं ये कथ्य।।
झूठ नहीं ये कथ्य, बात सन्मति की जानो।
बगुले जैसा ध्यान, कार्य निष्फल ही मानो।।
कुसुम रटे ज्यों तुंड़, रटन रटता अज्ञानी।
कर्म धूप मति दीप, भाव पूजा कर ज्ञानी।।

६३.

थाली

मेरे घर उतरी विभा, शशि किरणों के साथ।
थाली में भर भर रखूँ, चाँद उठा लूँ हाथ।।
चाँद उठा लूँ हाथ, धरा में भर दूँ तारे।
चाँदी सा हो विश्व, सुखी हो जग में सारे।।
कहे कुसुम सुन बात, भाव उत्तम हो तेरे।
सब के मन ये चाह, सोम उतरे घर मेरे।।

६४.

बाती

बाती घी मिल मिल जले, जला कहे सब दीप।
मोती होता कीमती, दर्द भोगती सीप।।
दर्द भोगती सीप, सत्य पर पर्दा झीना।
शिव बनने की रीत, गरल पड़ता है पीना।।
कुसुम जगत का भेद, निशा अरुणोदय लाती।
योग सभी ये देख, जला दीपक घी बाती।।

६५.

आशा

लेकर आशा मन चला, उड़ा दूसरे गाँव।
जा बैठा उड़ कर वहाँ, जहाँ सुखद सी छाँव।।
जहाँ सुखद सी छाँव, शांति का मोहक डेरा।
टूटी झूठी साध, कल्पना भ्रम था मेरा।।
कहे कुसुम हो हर्ष, हर्ष मिलता सुख देकर।
मनुज बाँट तू मोद, कौन जाता कुछ लेकर।।

६६.

उड़ना

उड़ना मेरे लाडले, नभ के बनना भाम।
हिम्मत मन में हो अगर, संभव हो सब काम।।
संभव हो सब काम, नही पथ में तू रुकना।
मन में दृढ़ विश्वास, व्यर्थ का कभी न झुकना।।
कहे कुसुम ये युद्ध, धैर्य धारण कर लड़ना।
नीव सदा रख ठोस, गगन तक ऊंचा उड़ना।।

६७.

खिलना

खिलना कैसा फूल का, रहते हैं दिन चार।
माली इनको तोड़ते, कभी काल की मार।।
कभी काल की मार, रूप शोभा है न्यारी।
चढ़े देव के शीश, गूँथ के माला प्यारी।।
कुसुम उतारे भाल, धूल में पड़ता मिलना।
फूलों को है ज्ञात, यहाँ दो दिन का खिलना।।

६८.

होली

आया अब मधुमास है, बीत गया है शीत।
होली मनभावन लगे, चंग बजाए मीत।।
चंग बजाए मीत, गीत मोहक से गाना।
घर लौटे हैं कंत, सजा है सुंदर बाना।।
जगा कुसुम अनुराग, प्रीत का उत्सव लाया।
नाचो गाओ आज, रंग ले मौसम आया।।

६९.

साजन

गोरी पूछे चाँद से, क्यों आए मुझ धाम।
मेरे साजन दूर हैं, क्या है तुम को काम।।
क्या है तुम को काम, पिया जब आए आना।
रहना सारी रात, चाँदनी बरसा जाना।।
कुसुम आलि का दर्द, गूँथती विरहा डोरी।
भर आँखों में नीर, छुपाती पीड़ा गोरी।।

७०.

सजना

कैसा सजना रूप का, मन का हो श्रृंगार।
मोह राग सब छोड़ कर, भावों का भृंगार।।
भावों का भृंगार, शुद्ध मन सुंदर रखना।
सदा रहे सत काम, पुण्य का मेवा चखना।।
करो कुसुम सत कर्म, मिले प्रतिपादन वैसा।
मन में हो जब मैल, रूप का सजना कैसा।।

७१.

डोरी

डोरी गूँथों सूत की, सूत-सूत मिल एक।
एक एक मिलते तभी, काज सभी हो नेक।।
काज सभी हो नेक, बढ़े आपस में नाता।
बढ़ता सद्व्यहवार, मनुज सुख साधन पाता।।
कहे कुसुम सुन बात, काम की करों न चोरी।
मिलजुल रहना साथ, प्रीत की बाँधों डोरी।।

७२.

बोली

बोली मीठी बोलिये, नहीं लगेगा मूल्य।
जो मृदु भाषा बोलते, लगे शहद के तुल्य।।
लगे शहद के तुल्य, सभी से पाते आदर।
बोल बोलते मंजु, ओढ़ सत्संगी चादर।।
कहे कुसुम सुन भद्र, बांध शब्दों की मोली।
बैण सुधारे काज, बोल बस मीठी बोली।।

७३.

पाना

पाना अपने आप को, करना गूढ़ विचार।
मन मंथन से ढूंढ़ना, आत्म रूप आचार।।
आत्म रूप आचार, झांक भीतर तक गहरा।
कर निज की पहचान, रखो प्रज्ञा का पहरा।।
कुसुम ज्ञान की बात, सदा सतपथ ही जाना।
मिटे जन्म का फेर, मोक्ष अविरल हो पाना।।

७४.

खोना

सोना तो खोना सदा, सजग रहो श्रीमान।
निज को उत्तम मानकर, मत फूलो अभिमान।।
मत फूलो अभिमान, दृष्टि समदर्शी धरना।
हो जग में कल्याण, कार्य परहित में करना।।
कुसुम उच्च हो भाव, द्रव्य का मत कर रोना।
शुचि संयम हो साथ, सदा शांतचित्त सोना।।

७५.

यादें

महके यादें फूल सी, सुरभित जीवन बाग।
होली रंग गुलाल ज्यों, छाया मन में फाग।।
छाया मन में फाग, विगत बातें मधु रस थी।
मुख पर लाती हास, रसा मकरंद सरस थी।।
कुसुम बोध की शाख, पपीहा बैठा चहके।
खोल के रखूँ द्वार, याद का पौधा महके।।

७६.

छोटी

छोटी छोटी बात से, कभी न करना डाह।
एक बार बिगड़े अगर, मिट जाती है चाह।।
मिट जाती है चाह, मनों में बैर पनपता।
थोड़े में दो टाल, प्रेम सुख भाव चमकता।।
कुसुम हृदय धर बात, प्यार से खाना रोटी।
डालो उन पर धूल, कड़ी बातें जो छोटी।।

७७.

मीठी

तेरी मोहक बाँसुरी, मीठी लगती श्याम।
छलिया ओ मनमोहना, तुम् ही हो सुख धाम।।
तुम ही हो सुख धाम, रात दिन रटती तुझको।
और न है आराध्य, भरोसा तेरा मुझको।।
कुसुम करे गुणगान, सदा सुध रखना मेरी।
कभी करो तुम बात, बात हो मीठी तेरी।।

७८.

बातें

बातें हैं जादू भरी, मीश्री देती घोल।
बाबा की तुम आस हो, मीठे तेरे बोल।।
मीठे तेरे बोल, अमृत कानों में घोले।
बैठ पेड़ की शाख, बाग में कोयल बोले।।
कुसुम खिलों ज्यों फूल, उड़े सौरभ दिन रातें।
बेटी चंपा डाल, नहीं कोरी ये बातें।।

७९.

चमका

चमका तारा रात में, समीर में अति वेग।
पूनम की इस रात में, सागर में उद्‌वेग।।
सागर में उद्‌वेग, तेज गति उठती लहरें।
घोर मचाए शोर, ज्वार पानी में गहरे।।
कुसुम चाँद की रात, तीर चाँदी ज्यों दमका।
बाँध मोह की डोर, गगन में चंदा चमका।।

८०.

गीता

गीता का अध्याय थे, लाल बहादुर नाम।
जीवन जिनका काम था, स्वाभिमान गुण धाम।
स्वाभिमान गुण धाम, देश हित कारज करता।
सैनिक और किसान, शान है नारा भरता।
कहे कुसुम वो निष्ठ, सौम्य जीवन ही जीता।
सिद्‌धांतो का दास, मान था उसका गीता।।

८१.

माना

माना राहें है कठिन, चलना तेरी शान।
राहों में रुकना नहीं, इस सच को पहचान।।
इस सच को पहचान, सदा बढ़ते ही रहना।
जो करना संकल्प, उसी की बातें कहना।।
कुसुम ज्ञान की बात, क्रिया करते ही जाना।
उनका फलता भाग्य, कर्म को ईश्वर माना।।

८२.

कहना

खारा कितना हो मगर, कहना हरदम सत्य।
सत्य बोलता जो यहाँ, आदर पाता नित्य।।
आदर पाता नित्य, शान से शीश उठाता।
मान करे फिर विश्व, आँख पर उसे बिठाता।।
कुसुम न होता अस्त, सत्यवादी का तारा।
चाहे कड़वे बोल, हो न हृदय कभी खारा।।

८३.

सहना

सहना सब प्रारब्ध को, गति कर्मो की मान।
शांत भाव से सब सहो, बात भाग्य की जान।।
बात भाग्य की जान, पुण्य पथ पर ही चलना।
नेकी का कर काम, दीप ज्यों झिलमिल जलना।।
कुसुम कहे सुन संत, धैर्य है सुंदर गहना।
सही नीति की बात, नीति पूर्वक ही सहना।।

८४.

वंदन

वंदन हो तव पाद में, दो विद्या वरदान।
मेधा से झोली भरो, वरद हस्त दो दान।।
वरद हस्त दो दान, शीश चरणों में रखती।
छवि निरखूँ दिन रात, विनय से वंदन करती।।
कुसुम मिले तव दृष्टि, हृदय बन जाए चंदन।
कृपा करो हे मात, करूं तुझको नित वंदन।।

८५.

आसन

आसन पंकज बैठती, विद्या देना काम।
तन पर उजले वस्त्र है, शतरूपा है नाम।।
शतरूपा है नाम, हाथ में रखती माला।
मिलते तब आशीष, जपे जब बालक बाला।।
कहे कुसुम कर जोड़, सदा प्रज्ञा का शासन।
माँ वर दे वरदान, श्वेत पंकज तव आसन।।

८६.

आतुर

उर्वी पर आतुर खड़ा, सतरंगी मधुमास।
कली कली खिलने लगी, भौंरों को मधु आस।।
भौंरों को मधु आस, भटकते कानन, वन वन।
देख धरा का रूप, खुशी छाई है जन जन।।
कुसुम मुग्ध कंदर्प, श्रृष्टि को धारे कर्वी।
वसंत वर है आज, सजीली दुल्हन उर्वी।।

८७.

आभा

बिखरी आभा सूर्य की, छायी थी चँहु ओर।
नभ पर बादल देख कर, नाचे वन में मोर।।
नाचे वन में मोर, घटा सावन की छाई।
देखो रे नर नार, झूमती ऋतु है आई।।
कुसुम खुशी है आज, देख के शोभा निखरी।
बरसे बादल जोर, गगन में आभा बिखरी।।

८८.

चितवन

कृष्णा राह निहारती, बैठी यमुना तीर।
चितवन तेरी देखने, भरे नैन में नीर।।
भरे नैन में नीर, दरश को तेरे तरसे।
तू ना आये पास, आँख से बादल बरसे।।
कुसुम जगत ये झूठ, झूठ है सारी तृष्णा।
निरंकार निर्लिप्त, कृष्ण है कहती कृष्णा।।

८९.

मोहक

ऐसा मोहक खेल था, चाँद छुपा घन बीच।
छुपम छुपाई खेलता, जैसे आँखें मीच।।
जैसे आँखें मीच, कभी बाहर को झाँके।
घूँघट की कर ओट, चुनर में तारे टाँके।।
मुग्ध कुसुम लख रूप, गगन का ललना जैसा।
प्रकृति करे अभिमान, देख स्वरूप निज ऐसा।।

९०.

शीतल

माटी से गागर बनी, शीतल देती नीर।
आया शीतलयंत्र तो, भोग रही है पीर।।
भोग रही है पीर, नहीं अब कोई क्रेता।
आज प्रजापति आस, दुखी इसका विक्रेता।।
कहे कुसुम सुन विज्ञ, शुरू हो फिर परिपाटी।
पीना ठंडा नीर, रखो घर गागर माटी।।

९१.

हारा

हारा मन ओ अक्षरा, मीरा तव आसक्त।
रंग हरि के रंग गई, सुध भूली वो भक्त।।
सुध भूली वो भक्त, रात दिन माला जपती।
चिंता जग की छोड़, स्नेह ज्वाला में तपती।।
कुसुम सुनो ये द्वंद, पड़ा पीना विष खारा।
सफल वही नर देह, श्याम पर जिसको हारा।।

९२.

जीता

जीता उसने जग सकल, पाई मन पर जीत।
निज पर जो शासन करें, अनुशासन हो मीत।।
अनुशासन हो मीत, बुद्ध सा वो बन जाता।
करता निज कल्याण, मान वो जग में पाता।
कुसुम कर्म का योग, सार हो उत्तम गीता।
जीवन उनका सिद्ध, सदा जो पर हित जीता।।

९३.

नारी

नारी कोमल ही नहीं, काम पड़े तलवार।
शीतलता है चाँद की, सूरज के सम वार।।
सूरज के सम वार, शक्ति स्वरूप है नित्या।
कभी नर्म है फूल, कभी अवतारी सत्या।।
कुसुम कभी वो शांत, कभी शिव तांडव भारी।
चंदन की है गंध, भाव कल्याणी नारी।।

९४.

साहस

धीरज साहस कर्म ही, जीवन के हैं मूल।
बिना कर्म जीवन लगे, जैसे कोई भूल।।
जैसे कोई भूल, दिशा विहीन हो भटके।
रोना रोए भाग्य, हार कर माथा पटके।।
कुसुम मिटा अज्ञान, खिला कर्मो के नीरज।
मन में रखना शोर्य, दु:ख बेला में धीरज।।

९५.

वेणी

बाँधे वेणी केश की, सिर पर चुनरी धार।
गागर ले घर से चली, चपल चंचला नार।।
चपल चंचला नार, शीश पर गागर भारी।
है हिरणी सी चाल, चाल है कितनी प्यारी।।
आँखों में है लाज, लटकती चोटी काँधे।
देखे दर्पण साफ, फूल से वेणी बाँधे।।

९६.

अंकुश

हाथी अंकुश से सधे, घोड़ा चाबुक मार।
मानव मन सम भाव से, दुर्जन रखते खार।।
दुर्जन रखते खार, साधना उनको भारी।
करे कार्य दुश्वार, सदा रहती मति मारी।।
कहे कुसुम सुन संत, चाह पर निग्रह साथी।
असंयमित हो राग, बने बढ़कर के हाथी।।

९७.

वंदन

चंदन है माँ तव चरण, शारद सुंदर रूप।
आप कृपा छाया लगे, ये जीवन की धूप।।
ये जीवन की धूप, विनय से मिलती शिक्षा।
मन्नत होती पूर्ण, मिलेगी ज्ञान की भिक्षा।।
कुसुम करे यूं भक्ति, हृदय से करती वंदन।
माता तेरे पाद, सदा महके ज्यों चंदन।।

९८.

थोड़ा

थोड़ा थोड़ा चाहिए, जग में सबको मान।
आदर सब को दीजिए, रखिए अपनी आन।।
रखिए अपनी आन, सदा गौरव से जीना।
करना अच्छा काम, जीवन सौरभ हो भीना।।
कहे कुसुम ये बात, गर्व से नाता जोड़ा।
रखना हरदम बान, पास हो चाहे थोड़ा।।

९९.

पूरा

पूरा अत्रिज पूर्णिमा, शोभित होती रात।
झिलमिल तारे हैं गगन, करे चाँदनी बात।।
करे चाँदनी बात, निशा मुख कितना पावन।
आसमान है साफ, सकल बीता अब सावन।।
कहे कुसुम ऋतुराज, उड़ा मकरंदी चूरा।
हर मौसम के साथ, साल भी बदले पूरा।।

१००.

सपना

सपना नैनों में सजे, मन में सजती आस।
दिवा स्वप्न जब देखना, हिम्मत रखना पास।।
हिम्मत रखना पास, नियोजित जीवन जीना।
निज पर रख विश्वास, कर्म का मधुरस पीना।।
कहे कुसुम सुन बात, भाल उन्नत रख अपना।
सब दिन होता पूर्ण, कर्मयोगी का सपना।।

कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **कुसुम कोठारी 'प्रज्ञा'**

शिक्षा- राजस्थान विश्व विद्यालय से स्नातक

कार्य- गृहणी

रुचि- कविता, लेख, कहानियां लिखना, प्रकृति पर लेखन पहली पसंद

ब्लॉग- मन की वीणा, फेसबुक पर नियमित रचनाएं प्रेसित,

लेखन- करीब चार साल से लेखन कार्य, स्वांत सुखांत लेखन, कुछ समय से छंद बद्ध लेखन मे रुझान।

साझा काव्य संकलन-

१. ये कुण्डलियां बोलती है

२. नन्ही फुलवारी- बाल कविता संग्रह

३. अक्षय गौरव ई-पत्रिका में प्रकाशित कहानी, 'माँ का मन'

४. फेसबुक मंच 'भावों के मोती'

५. हिंदी साहित्य के कर्णधार में

६. विविध प्रतियोगिता में सम्मान पत्र

७. प्रतिलिपि पर नियमित कहानियां, लेख, कविताएं

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-229-6

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/